

# दुआ सिर्फ ﷻ ही से

मेरे मुसलमान भाईयों! शैतानी वसवसों के बावजूद अपनी मौत से पहले पहले सिर्फ एक मर्तबा इस तहरीर को अव्वल ता आखिर लाज़मी, लाज़मी, लाज़मी पढ़ लें!

**वाहिद "नाकाबिले माफी जुर्म" कौन सा है?** ﷻ और उसके महबूब, हमारे निहायत ही शफीक आका, इमामे आजम, इमामे कायनात, सय्यिदुल अव्वलीन वल आखरीन, इमामुल अंबिया वल मुरसलीन, शफीउल मुजनबीन, रहमतुल लिल आलमीन, सय्यिदना मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ की मुबारक तालीमाते वहीह (कुरआन और उसकी तफसीर यानी सहीह अहादीस) की रौशनी में दुआ सिर्फ और सिर्फ एक ﷻ ही से की जा सकती है। ﷻ के अलावा किसी भी दूसरी हस्ती से दुआ मांगना खालिसतन शिर्क है और इस गुनाह मे मुलत्विस इन्सान अगर बगैर तौबा के मर गया तो कयामत के रोज खुद ﷻ भी इस गुनाह को हर गिज माफ नहीं फरमाएगा। इसी शिर्क के खतरे से आगाही के लिये (नीचे लिखी) रिक्कत अंग्रेज कुरआनी आयात और सहीह अहादीस मुलाहिजा फरमाए:

❶ [ سورة الانعام : آيت نمبر 88 ] وَلَوْ أَشْرَكُوا حَبِطَ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْفُلُونَ ۝  
**तर्जुमा आयत-ए-मुबारका:** "और अगर (बिलफर्ज) वह हजराते (अंबियाए किराम ﷺ) भी शिर्क करते तो उनके भी तमाम (नेक) आमाल बर्बाद हो जाते।"

❷ [ سورة الزمر : آيت نمبر 65 ] وَلَقَدْ أَوْحَىٰ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكَ لَئِنْ أَشْرَكَتَ لَيَحْبِطَنَّ عَنْكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝  
**तर्जुमा आयत-ए-मुबारका:** और बेशक (ऐ महबूब ﷺ) हम ने आप ﷺ की तरफ भी और आप ﷺ से पहले (अंबिया-ए-किराम ﷺ) की तरफ भी यही वहीह फरमाई है कि अगर तुम ने शिर्क किया तो जरूर तुम्हारे आमाल बर्बाद हो जाएंगे और तुम खसारा पाने वालों में से हो जाओगे।"

❸ [ سورة النساء : آيت نمبر 116 ] إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا ۝  
**तर्जुमा आयत-ए-मुबारका:** "बेशक ﷻ (इस गुनाह को तो) हरगिज माफ नहीं करेगा। कि कोई उसके साथ (किसी किस्म का) शिर्क करे (हाँ) इसके अलावा के गुनाह माफ करदेगा जिस के लिये चाहेगा और जो कोई भी ﷻ के साथ शिर्क में मुब्तला हुआ तो बेशक वह गुमराह हुवा (और) गुमराही में दूर जा पड़ा।"

❹ [ سورة المائدة : آيت نمبر 72 ] ..... إِنَّهُ مَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ ۚ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ۝  
**तर्जुमा आयत-ए-मुबारका:** बेशक जिस किसी ने भी ﷻ के साथ (किसी किस्म का) शिर्क किया तो बेशक ﷻ ने ऐसे शख्स पर जन्नत को हराम कर दिया है और उसका ठिकाना (तो दोजख की) आग है और (वहाँ ऐसे) जालिमों का कोई भी मददगार ना होगा।"

❺ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अबू बकर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया: "क्या मैं तुम्हें ना बताऊँ कि सब से बड़ा गुनाह कौन सा है ? और फिर आप ﷺ ने इसी सवाल को 3 मर्तबा दोहराया, तो सहाबा किराम ﷺ ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह ﷺ जरूर बता दीजिए ! तो आप ﷺ ने इर्शाद फरमाया: ﷻ [ صحيح بخارى " كتاب الشهادات " حديث نمبر 2654 , صحيح مسلم " كتاب الايمان " حديث نمبر 259 ]

❻ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अबु हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: " ﷻ के हर नबी ﷺ को एक मक्बूल दुआ मिलती है और हर नबी ﷺ ने वह दुआ मांगने में जल्दी की और इसी दुनिया में अपनी-अपनी दुआ कर ली और मैंने अपनी दुआ अपनी उम्मत के लिये संभाल कर रख ली है और कयामात के दिन मेरी वह दुआ (शिफात) हर उस शख्स को पहुँचेगी जो इस हाल में फौत हुवा कि उसने ﷻ के साथ किसी किस्म को शिर्क ना किया होगा।" [ صحيح بخارى " كتاب الدعوات " حديث نمبر 6304 , صحيح مسلم " كتاب الايمان " حديث نمبر 491 ]

❼ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अबूजर गिफारी ﷺ और सय्यिदना अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ﷻ इर्शाद फरमाता है: "ऐ इब्ने आदम! अगर तू मेरे पास जमीन भर गुनाह करके आये, फिर तू इस हाल में मुझ से मिले कि तूने मेरे साथ किसी किस्म का शिर्क ना किया हो तो मैं उसी कदर मगाफिरत व बक्शीश लेकर तुझसे मुलाकात करूँगा।" [ صحيح مسلم " كتاب الدعوات " حديث نمبر 6833 , جامع ترمذی " كتاب الدعوات " حديث نمبر 3540 ]

❽ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना मआज बिन जबल ﷺ और सय्यिदना अबुहरदा ﷺ रिवायत करते हैं कि मेरे इन्तिहाई मुखिलस दोस्त (रसूलुल्लाह ﷺ) ने मुझे वसियत फरमाई: " ﷻ के साथ किसी को शरीक ना करना चाहे तेरे टुकड़े-टुकड़े कर दिये जाएँ या तुझे आग में जला दिया जाए।" [ سنن ابن ماجه " كتاب الفتن " حديث نمبر 4034 , مسند احمد 22,128 ]

**नोट:** ऊपर लिखी आयात और अहादीस को पढ़ लेने के बाद कुल 03 अहम तरीन नताइज निकलते हैं जिनको मौत से पहले-पहले जानना किसी भी इंसान की जिंदगी में सबसे "अहम तरीन मालूमात" हैं:

- ❶ **शिर्क** ही वह संगीन, खतरनाक, भयानक और नाकाबिले माफी जुर्म है जो इन्सान को हमेशा के लिये "जन्नत" से महरूम करवाकर हमेशा-हमेशा के लिये "दोजख" का ईधन बना देगा।
- ❷ **शिर्क** करने वाले को बरोजे कयामत कोई मददगार नहीं होगा यहाँ तक कि इमामुल अंबिया वल मुरसलीन, शफीउल मुजनबीन, सय्यिदना मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ भी उसके कुछ काम ना आ सकेंगे।
- ❸ जो भी इन्सान अपने आपको हर हाल में **शिर्क** से महफूज रखने में कामयाब हो गया तो उसके बाकी गुनाह माफ होने की उम्मीद इस कायनात के अकेले मालिक ﷻ ने खुद दिला दी है।



## 2 "इस्लाम" में "दुआ" की तारीफ क्या है ?

अरबी डिक्शनरी "अलकामूस" के मुताबिक दुआ का मतलब है: पुकारना, बुलाना, इल्तिजा करना, मांगना सवाल करना और शरीअत मुहम्मदिया ﷺ की इस्तलाह में "दुआ" का मतलब है, हर हाल में ख्वाह मुश्किल व मुसीबत हो या राहत व आसानी हो "गैब" में सिर्फ एक ﷺ ही को पुकारना "यानी ﷺ ही से मदद मांगना और ﷺ ही से हाजत रवाई और मुश्किल कुशाई के लिये दरखास्त व सवाल करना।" चुनाएँ ﷺ ने अपने महबूब ﷺ की ज़बाने मुबारक से यूँ कहलवाया:

★ وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي قَرِيبٌ أَجِيبْ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِلَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ [سورة البقرة: آیت نمبر 186]

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: (ऐ महबूब ﷺ) और जब आप ﷺ से मेरे बन्दे मेरे मुताल्लिक सवाल करें। (तो आप ﷺ फरमाओ:) यकीनन मैं बिल्कुल नजदीक हूँ। कुबूल करता हूँ पुकारने वाले की पुकार। ("दुआ") जब वह मुझे पुकारता है। पस उन्हें भी चाहिये कि मेरा हुकुम माने (मेरी इबादत करें और दुआ भी मुझ ही से मांगें।) और मुझ ही पर ईमान लाएँ ताकि वे कामयाबी पा सकें।

## "दुआ" दरअसल "इबादत" है और सिर्फ "मअबूद" से ही की जाती है

इस जिम्न में चन्द आयात और सहीह अहादीस मुलाहिजा फरमाएँ।

① ﷺ हमसे रोजाना 05 वक्त की तमाम नमाज़ों की हर रकअत में यह अज़ीम वादा लेता है। [سورة الفاتحة: آیت نمبر 4] اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: "(ऐ ﷺ!) हम तेरी ही इबादत करते हैं। (और करेंगे) और (ऐ ﷺ!) हम तुझ ही से मदद (यानी दुआ) मांगते हैं और दुआ मांगेंगे।"

नोट: "نَعْبُدُ" और "نَسْتَعِينُ" दोनों फअले मुज़ारे के सीगे हैं जो अरबी ज़बान में हाल और मुस्तकबिल दोनों के माने देते हैं इसलिये बयक वक्त दोनों माने दुरुस्त हैं।

नोट: ﷺ ने इन्सानों को झजोड़ते हुए कुरआन-ए-पाक में सवालिया अनदाज में समझाया है कि "दुआ" सिर्फ मअबूद-ए-हकीकी यानी ﷺ के साथ ही खास है चुनाये इर्शाद होता है:

② اَمَّنْ يُجِيبُ الْبُظْظَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَاءَ الْأَرْضِ إِنَّهُ لَعَظِيمُ فَتْوًى [سورة النمل: آیت نمبر 63]

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: (ज़रा बताओ तो) कौन कुबूल करता है बेकरार की फरियाद को जब वह उस (ﷺ) को पुकारे, और दूर करता है तकलीफ को, और तुम्हें जमीन में खलीफा बनाता है (अगलों का) क्या ﷺ के साथ और कोई मअबूद भी है? (मगर) तुम (इस हकीकत पर) कम ही गौर व फिक्र करते हो!

③ तर्जुमा सहीह हदीस: सय्यिदना नोमान बिन बशीर رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया। "الدُّعَاءُ هُوَ الْعِبَادَةُ" (तर्जुमा: दुआ "इबादत" ही तो है।) इसके बाद आप ﷺ ने अपनी इस बात के सुबूत में कुरआन-ए-हकीम से दर्जे जैल आयत-ए-मुबारिका भी तिलावत फरमाई:

④ وَقَالَ رَبُّكُمْ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ ذُخْرَيْنِ [سورة المومن: آیت نمبر 60]

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: "और तुम्हारे रब ﷺ ने इर्शाद फरमाया है कि मझ से दुआ करो मैं कुबूल करूँगा, बेशक जो लोग मेरी इबादत (दुआ) से तकब्बुर करते हैं, अनकरीब वह (बदबख्त) जलीलो-खवार हो कर दोज़ख में डाल दिये जाएँगे।

नोट: मन्दर्जा बाला आयात और सहीह हदीस पढ़ लेने के बाद "दुआ" (यानी गायब में मदद के लिये पुकारने) से मुताल्लिक 3 अहम तरीन नताइज निकलते हैं:

❶ दुआ "इबादत" कि एक आला किस्म होने के बाअस (की वहज से) सिर्फ और सिर्फ एक ﷺ की हस्ती के साथ ही खास है।

❷ दुआ को कुबूल करके तकलीफ दूर कर देना सिर्फ "मअबूद" के साथ ही खास है इसलिये ﷺ के अलावा किसी और से "दुआ" करना गोया उसे "मअबूद" बना लेने के ही मुतरादफ (बराबर) है।

❸ ﷺ के अलावा किसी भी और हस्ती से "दुआ" करने वाला मुतकब्बिर इन्सान शिर्क में मुब्तला होने के बाअस (की वजह से) जलील -व-खवार होकर "दोजख" में डाल दिया जाएगा।

## "مِنْ دُونِ اللَّهِ" से दुआ करना शिर्क है क्योंकि वह नफे व नुकसान के मालिक नहीं

इस को समझने के लिये चन्द आयात और सहीह हदीस मुलाहिजा फरमाएँ:

① قُلْ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُمْ مِنْ دُونِهِ فَلَا يَمْلِكُونَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيلًا ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَىٰ رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ وَيَرْجُونَ رَحْمَتَهُ وَيَخَافُونَ عَذَابَهُ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُورًا [سورة بنی اسرائیل: آیات نمبر 56 اور 57]

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: "(ऐ महबूब ﷺ) ! आप फरमाओ: (ऐ लोगो!) उस (ﷺ) के अलावा जिन के मुताल्लिक तुम्हें बड़ा ज़ोअम (घमंड) है, जरा उनको पुकार कर देख लो, ना तो वह तुम से तकलीफ दूर कर सकते हैं और ना ही तकलीफ बदल देने पर कादिर हैं। जिन (हस्तियों) को ये पुकार रहे हैं वे तो खुद अपने रब ﷺ की बारगाह में वसीला (नेक आमाल के जरिए कुर्ब) की जुस्तजू में रहते हैं कि कौन उन में से अपने रब ﷺ के ज़्यादा करीब होता है, और उसकी रहमत के उम्मीदवार रहते हैं, और उसके अजाब से डरते रहते हैं, बेशक तुम्हारे रब ﷺ का अज़ाब डरने की ही शै है।"

नोट: मन्दर्जा बाला (ऊपर लिखी) आयत में ﷺ ने ना सिर्फ अपने नेक बन्दों को "مِنْ دُونِهِ" फरमाया बल्कि साथ ही उन नेक बन्दों के मुश्किल कुशा और हाजत रवा होने की भी 100 % नफी फरमा दी।

② مَا الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ وَأُمُّهُ صِدِّيقَةٌ كَانَا يَأْكُلِي الطَّعَامَ أَنْتَظِرُ كَيْفَ تُبَيِّنَ لَهُمُ الْآيَاتِ ثُمَّ أَنْظِرْ أَتَىٰ يُفَكِّحُونَ [سورة المائدة: آیات نمبر 75 اور 76]

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: "ईसा बिन मरियम رضي الله عنه तो नहीं मगर एक रसूल ही बेशक उन से पहले भी बहुत रसूल गुजरे हैं और उनकी माँ एक सच्ची औरत थी, वह दोनों (माँ बेटा) खाना खाते थे (इन्सान ही तो थे) देखो हम अपनी आयात उनके लिये कैसे खोल कर बयान करते हैं। और फिर उन (मुशरिक ईसाइयों) की तरफ भी देखो कि कैसे उल्टे फिरे जाते हैं। (ऐ महबूब ﷺ!) आप फरमाओ: क्या तुम लोग ﷺ के अलावा उन (माँ बेटा) की इबादत करते हो जो ना तुम्हारे नुकसान का इखितयार रखते हैं और ना ही नफे का, और ﷺ ही (हर दुआ) सुनने वाला इल्म रखने वाला है।"

नोट: मन्दर्जा बाला आयात में ﷺ ने ना सिर्फ ईसा बिन मरियम رضي الله عنه और उनकी वालिदा को "مِنْ دُونِ اللَّهِ" फरमाया बल्कि उनके मुश्किल कुशा और हाजत रवा होने की भी 100 % नफी फरमा दी।



**3 तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना उमर बिन खत्ताब رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया: मेरी शान को इस तरह मत बढ़ा देना जैसा कि नसारा (ईसाइयों) ने ईसा इब्ने मरियम عليه السلام को (तारीफ में मुबालगा करते हुए उन्हें उनके मुकाम से ही) बढ़ा दिया था, मैं तो उसका बन्दा हूँ बस मुझे ﷺ का बन्दा और उसका रसूल ﷺ ही करना।

[صحیح بخاری "کتاب الانبياء" حدیث نمبر 3445]

**नोट:** मन्दर्जा बाला हदीस के तहत हमें रसूलुल्लाह ﷺ की गुस्ताखी से बचने के लिये "نُورٌ مِّنْ نُّورِ اللَّهِ" के खुद साखता (खुद से बनाए) गुस्ताखाना अकीदे से तौबा कर लेनी चाहिए। क्योंकि ऐसा अकीदा ईसाइयों के सय्यिदना ईसा عليه السلام को ﷺ का बेटा करार देने के शिर्क से मुख्तलिफ (अलग) नहीं। जबकि ना तो ﷺ से कोई निकला और ना ही ﷺ किसी से निकला है।

[سورة الاخلاص: آیت نمبر 3]

**"अताई, गैर मुस्तकिल बिज्जात और महदूद" का फ़र्क** ﷺ ने इन्सानों की चन्द सिफात को अपनी सिफाते कामिला का मज़हर बनाया है। मसलन दर्जे ज़ेल आयात में बताई गई इन्सान की सिफाते अताई, गैर मुस्तकिल बिज्जात और महदूद हैं और ﷺ की सिफाते कामिला से मुख्तलिफ हैं। इसी लिये सिर्फ "समीअ" और "बसीर" के अल्फाज़ एक जैसे होने से शिर्क नहीं होगा:

❶ [سورة الدهر: آیت نمبر 2] إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ نَّبْتَلِيهِ فَجَعَلْنَاهُ سَمِيعًا بَصِيرًا

**तर्जुमा आयत-ए-मुबारक:** "बेशक हम ( ﷻ ) ने ही इंसान को एक मिले जुले नुत्फे से पैदा किया ताकि उसको आजमाए। पस इसे "समीअ" और "बसीर" (यानी सुनने और देखने वाला) बना दिया।"

**नोट:** मगर जो सिफाते कामिला ﷻ ने अपने लिये खास फरमा ली है मसलन: ❶ इबादत और ❷ गैब में मदद के लिये पुकारना "यानी दुआ को इन सिफात को अताई गैर मुस्तकिल बिज्जात, और महदूद का फ़र्क रखने के बावजूद मखलूक में मानना खालिसतन शिर्क और नाकाबिले माफी गुनाह है। नऊजू बिल्लाह ﷻ इस वाज़ेह हकीकत को समझने के लिये मन्दर्जा ज़ेल (नीचे लिखी) सहीह हदीस मुलाहिजा फरमाएँ:

**2 तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضي الله عنه रिवायत करते हैं: "एक सहाबी رضي الله عنه हाज़िरे खिदमत हुए और अर्ज किया: "يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا شَاءَ اللَّهُ وَشِئْتُ" (तर्जुमा: जो ﷻ चाहे और जो आप ﷺ चाहें) आप ﷺ ने इर्शाद फरमाया: "جَعَلْتَنِي لِلَّهِ عَدْلًا بَلْ مَا شَاءَ اللَّهُ وَحْدَهُ" (तर्जुमा: तूने मुझे ﷻ के बराबर बना दिया। बल्कि यह कहो कि जो अकेला ﷻ चाहे)।"

[مُسْنَدُ أَحْمَد: حدیث نمبر 3247, جلد نمبر 1, صفحہ نمبر 347]

**नोट:** इस हदीस पर थोड़ा सा गौर करने से यह हकीकत बिलकुल वाज़ेह हो जाती है कि उस सहाबी رضي الله عنه ने यकीनन रसूलुल्लाह ﷺ को "अताई इख्तियार का मालिक" और गैर मुस्तकिल बिज्जात का अकीदा" रखकर ही तो "مَا شَاءَ اللَّهُ وَ مَا شِئْتُ" कहा था मगर आप ने उसे शिर्क करार दिया और उस सहाबी رضي الله عنه की इस्लाह फ़रमाई। हमारी आँखे खोलने के लिये यही एक मिसाल ही काफी है। अलहमदुलिल्लाह ﷻ

**औलिया ﷻ को "يَا ذُنَ اللَّهِ" पुकारने का मसअला** ﷻ के महबूब ﷺ ने अपनी भोली भाली उम्मत को शिर्क से 100% पाक अकीदे की यूँ तालीम फरमाई है:

★ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदा आयशा رضي الله عنها रिवायत करती हैं: "जब आसमान पर बादलों की सूरत में बारिश के आसार जाहिर होते तो रसूलुल्लाह ﷺ का रंग तब्दील हो जाया करता आप ﷺ कभी घर से बाहर आते कभी अन्दर जाते, कभी आगे जाते कभी पीछे हटते, और जब बारिश शुरू हो जाती तो फिर कहीं जाकर आप ﷺ से खौफ के आसार ज़ाइल होते। सय्यिदा आयशा رضي الله عنها फरमाती हैं कि मैंने आप ﷺ से पूछा कि लोग जब बादल देखते हैं तो बारिश की उम्मीद से खुश होते हैं जबकी आप ﷺ परेशान हो जाते हैं? तो आप ﷺ ने इर्शाद फरमाया: "ऐ आयशा! इस बात की क्या ज़मानत है कि इन बादलों में अज़ाब नहीं होगा जैसा कि "कौमे आद" ने जब (अनजाने में) "अज़ाब" को बादल की सूरत में अपने मैदानों के समान आते देखा तो (खुशी से) कहने लगे: "ये बादल है जो हम पर बरसेगा" (लेकिन बादलों से आग निकली और वे हलाक हो गये)। आप ﷺ जब कभी भी बादल देखते तो ﷻ के हुज़ूर अर्ज करते: ऐ ﷻ ! इसे रहमत बना दे।"

[صحیح بخاری "کتاب التفسیر" حدیث نمبر 4551, صحیح مسلم "کتاب الاستسقاء" حدیث نمبر 2085]

**नोट:** ﷻ की तरफ से बारिश बरसाने की ड्यूटी सय्यिदना मीकाईल عليه السلام के पास है और वह फरिशतों के रसूल और जिन्दा भी हैं इसके बावजूद रसूलुल्लाह ﷺ ने कभी भी सय्यिदना मीकाईल عليه السلام को मदद के लिये नहीं पुकारा, तो यह कैसे होसकता है कि आप ﷺ फौत शदगान से "يَا ذُنَ اللَّهِ" मदद माँगने का हुक्म दें। रसूलुल्लाह ﷺ ने अपनी उम्मत को बारिश माँगने के लिये कभी ये कलमात नहीं सिखाए: "ऐ मेरी उम्मत के लोगो! तुम लोग बारिश के लिये सय्यिदना मीकाईल عليه السلام को "अताई इख्तियार का मालिक समझ कर" या फिर "गैर मुस्तकिल बिज्जात का अकीदा रखते हुए" सुबह-शाम बार बार यूँ पुकारा करो:

❶ **المدد يا ميكائيل !** , ❷ **يا ميكائيل ! نظركم فرمائیں !** , ❸ **يا ميكائيل ! هم یربارش نازل فرمائیں !** ..... **نَعُوذُ بِاللَّهِ**

सय्यिदना मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ ने इन शिकिया कलिमात की बजाए "सलातुल इस्तिस्का" यानी बारिश के लिये नमाज के जरीए ﷻ की तरफ रूजू करने की तल्कीन फरमाई क्योंकि फ़रिशतों के ड्यूटी पर मामूर होने का हर गिज यह मलतब नहीं कि हम फ़रिशतों को पुकारना शुरू कर दें क्योंकि फ़रिशतों को "गैब में मदद के लिये पुकारना" खालिसतन शिर्क और नाकाबिले माफी गुनाह है। नऊजू बिल्लाह ﷻ

**गुस्ताखाना नारों और "नमाज-ए-गौसिया" का अन्जाम** ﷻ के अलावा अगर सय्यिदना मीकाईल عليه السلام फ़रिशतों को भी "गायब में मदद के लिये पुकारना" अगर खालिसतन शिर्क है तो फिर जोश में आकर बुर्जुगों से अंधी अकीदत में मन्दर्जा ज़ेल (नीचे लिखे हुये) गुस्ताखाना नारे लगाना कहाँ की सच्ची तौहीद और कहाँ का सहीह इस्लामी अकीदा है? फैसला आप के हाथ में है -----! ❦

❶ **अल मदद या अली मुशिकल कुशा** ..... जाने या अली ❦ ❷ **अल मदद या गौसे आजम** ..... या शेख अब्दुल कादिर जीलानी ❦ नऊजू बिल्लाह ﷻ ❸ **या मुईनुद्दीन चिश्ती** ..... पार लगा दे किश्ती ❦ ❹ **बरी बरी सरकार बरी** ..... खोट किस्मत कर दे हरी ❦ नऊजू बिल्लाह ﷻ

**नोट:** बाज़ गुस्ताख लोगो ने अपनी मुशिकलात व परेशानियों के हल के लिये शेख अब्दुल कादिर जीलानी रहिमहुल्लाह (अल्मुतवप्फा 561 हि) से खुद ही एक गुस्ताखाना "नमाज-ए- गौसिया" भी मन्सूब कर रखी है।



4

## नमाज़-ए-गौसिया का तरीका

"हाजत पूरी होने के लिये सलातुल इसरार भी निहायत ही मौस्सर है.....इसे "नमाज़-ए-गौसिया" भी कहते हैं----

इसकी तर्कीब यह है कि बाद नमाज मगरिब सुन्नतें पढ़ें कर दो रकात नाफिल पढ़ें और बेहतर यह है कि "अल्हम्दु लिल्लाह" के बाद हर रकाआत में 11 बार "قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ" पढ़ें। सलाम के बाद ﷻ की हम्दो सना करे फिर नबी ﷺ पर 11 बार दरुद व सलाम अर्ज करे ---- फिर इराक़ की जानिब 11 कदम चले और हर कदम पर कहें: يَا غُوثَ الْغُوثَيْنِ وَيَا كَرِيمَ الطَّرْقَيْنِ أَغْنِنِي وَأَمِدِّدْنِي فِي قَضَاءِ حَاجَتِي يَا قَاضِيَ الْحَاجَاتِ

(तर्जुमा: ऐ जिनों और इन्सानों के फरियाद रस! और ऐ माँ बाप की तरफ से बुजुर्ग मेरी फरियाद को पहुँचिये और मेरी हाजत में मेरी मदद करिये। ऐ हाजतों को पूरा करने वाले ----" [ 1054 فضائل نوافل صفحہ ] بریلوی: مولانا امجد علی قادری "بہار شریعت حصہ چہارم" صفحہ 263 ، بریلوی: مولانا محمد الیاس عطار قادری "فیضان سنت" فضائل نوافل صفحہ 1054

نوٹ: کुरآن-ع- ہکیمی نے واجہہ تौर پر ان لوگوں کے انجزام کا بھی جیکر کر دیا ہے جو اؤلیا اور बुजुगाने दीन वगैरह को ﷻ के अलावा दुआ के लिये पुकारते हैं चुनाँचे इर्शाद होता है।

★ وَمَنْ أَصْلَ مَنْ يَدْعُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ مَنْ لَا يَسْتَجِيبُ لَهُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ وَهُمْ عَنْ دُعَائِهِمْ غَفُلُونَ ○ وَإِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوا لَهُمْ أَعْدَاءً ○ وَكَانُوا بِعِبَادَتِهِمْ كُفْرِينَ ○ [ سورة الاحقاف : آیات نمبر 5 اور 6 ]

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: "और उससे बढ़ कर गुमराह और कौन होगा ? जो ﷻ को छोड़ कर ऐसों को (दुआ के लिये) पुकारता है जो कयामत तक उसकी पुकार ना सुन सकें, बल्कि उसके पुकारने से बेखबर हों। और जब (कयामत में) लोगों को जमा किया जाए तो वे हस्तियाँ उसकी दुश्मन हो जाएं। और उसकी इबादत (पुकार) से साफ इन्कार कर जाएँ।"

## ﷻ के फरमान पर रसूलुल्लाह ﷺ के सुन्नत अज़्कार

ﷻ के हुक्म की तामील करते हुए रसूलुल्लाह ﷺ के मुबारक उसवा-ए-हसना की झलकियाँ मुलाहिजा फरमाएँ।

1

[ سورة الانعام : آیت نمبر 17 ]

○ وَإِنْ يَسْتَسْكِنُ اللَّهُ بِضَرْ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ وَإِنْ يَسْتَسْكِنُ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ○

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: "और (ऐ बन्दे) अगर ﷻ तुझे किसी तकलीफ में डाल दे तो उस तकलीफ को दूर करने वाला कोई नहीं मगर वही (ﷻ), और (ऐ बन्दे) अगर वह (ﷻ) तुझको कोई फायदा पहुँचाना चाहे तो (ﷻ) हर चीज पर पूरी तरह कुदरत रखने वाला है।",

2 तर्जुमा सहीह हदीस: "सय्यिदना मुगीरह बिन शैबा ﷺ रिवायत करते हैं कि जब भी रसूलुल्लाह ﷺ फर्ज नमाज स फारिग होते तो इन अल्फाज़ का जिक्र फरमाया करते: "اللَّهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطٍ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ" (तर्जुमा: ऐ ﷻ जो तू अता फरमाना चाहे उसे कोई उसे कोई रोक नहीं सकता और जो तू रोक ले उसे कोई अता नहीं कर सकता। और किसी की दौलत व मन्सब उसे तेरे अजाब से नहीं बचा सकती)"

[ صحيح بخاری "كتاب الاذان" حديث نمبر 844 ، صحيح مسلم "كتاب الصلوة" حديث نمبر 1342 ]

3 तर्जुमा सहीह हदीस: सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन मसूद ﷺ रिवायत करते हैं कि जब कभी रसूलुल्लाह ﷻ को कोई तकलीफ व परेशानी पहुँचती तो आप ﷺ का तकिया कलाम यही हुआ करता था: "يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغِيْثُ" तर्जुमा: एक खुद से जिन्दा, हर शै को थामने वाले में तेरी रहमत के साथ तेरी मदद का सवाल करता हूँ।"

[ المستدرک للحاکم "كتاب الدعاء" حديث نمبر 1875 ، جلد نمبر 1 ، صفحہ نمبر 689 ]

## रसूलुल्लाह ﷺ का सहाबा किराम की तर्बियत फरमाना

ﷻ के महबूब सय्यिदना मुहम्मदुरसूलुल्लाह ﷺ की तर्बियत फरमाने की झलकियाँ मुलाहिजा फरमाएँ।

1 तर्जुमा सहीह हदीस: सय्यिदना अबु हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे नसीहत फरमाई: "तुम अपने लिये नफ़ाबकश शै के हुसूल की खातिर मेहनत और कोशिश करो। (ज़ाहिरी अस्बाब इखितयार करो) "وَاسْتَعِزْ بِاللَّهِ" (तर्जुमा: और फिर ﷻ से मदद मांगों) और काहिली और सुस्ती न करना (फिर) अगर तुझे कोई नुक़सान पहुँचे तो ऐसे मत कहना कि मैं (इस तरह) कर लेता तो ऐसे-ऐसे हो जाता। बल्कि यही कहना कि जो ﷻ ने मुक़दर किया और जो उसने चाहा किया क्योंकि "अगर मगर" शैतान के अमल खोल देता है।"

[ صحيح مسلم "كتاب القدر" حديث نمبر 6774 ]

2 तर्जुमा सहीह हदीस: सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ का बयान है कि एक दिन मैं रसूलुल्लाह ﷺ के पीछे सवारी पर बैठा हुआ था तो आप ﷺ ने (नसीहत करते हुए) इर्शाद फरमाया: "ऐ बेटे! तु ﷻ के अहकाम की हिफ़ाज़त कर ﷻ तेरी हिफ़ाज़त फ़रमाएंगा। ﷻ के हुक्क का खयाल रख तू उसे अपने सामने पाएगा। "إِذَا سَأَلْتَ فَاسْأَلِ اللَّهَ وَإِذَا اسْتَعَنْتَ فَاسْتَعِنْ بِاللَّهِ" (तर्जुमा: और जब तू सवाल करे तो सिर्फ़ ﷻ से करना और जब तू मदद तलब करे तो सिर्फ़ ﷻ से मदद तलब करना) और जान ले कि पूरी उम्मत भी जमा होकर तुझे कोई फ़ायदा पहुँचाना चाहे तो नहीं पहुँचा सकेगी मगर जो ﷻ चाहे और अगर ﷻ चाहे। क़लम उठ गए और सहीहफ़े खुशक हो गए।"

نوٹ: کوربان जाएँ سہابا کیرام ﷺ کی "خوش اکریدگی" पे कि रसूलुल्लाह ﷺ की वाज़ेह नसीहतें सुनने के बाद आज के "गुस्ताख उलमा" और अवाम की तरह दर्जे ज़ैल सवालात हरगिज़ नहीं पूछे:

❶ या रसूलुल्लाह ﷺ हम पानी में डूब रहे हैं तो किसी इन्सान को मदद के लिये बुलाना क्या शिर्क है ? ❷ हम भूखे हों तो अपनी माँ से रोटी -सालन माँगना क्या शिर्क है ?

❸ या रसूलुल्लाह ﷺ हम मजबूर हों तो किसी से कर्ज़ माँगना क्या शिर्क है ? ❹ अपना वज़न उठाना हो तो किसी आदमी को अपनी मदद के लिये बुलाना क्या शिर्क है ? ❦ उनऊजु बिल्लाह ﷻ

نوٹ: سہابا کیرام ﷺ نے ایسے गुस्ताखानا سवालात नहीं किये। क्योंकि वे बखूबी जानते थे कि रसूलुल्लाह ﷺ की वाज़ेह नसीहतें "गैब में मदद के लिये पुकारने" यानी दुआ से मुताल्लिक हैं।

## सहाबा किराम की खुश अक्रादगी की मिसालें:

ﷻ के महबूब सय्यिदना मुहम्मदुरसूलुल्लाह ﷺ की तर्बियत फरमाने का नतीजा

यह निकला कि रसूलुल्लाह ﷺ की दुनियवी जिन्दगी के दौरान भी "गैब में मदद" यानि दुआ के लिये ना तो रसूलुल्लाह ﷺ पुकारा और ना ही किसी फ़रिश्ते को पुकारा



**5** बल्कि वह तो सिर्फ ﷺ ही को पुकारते थे।

**1 तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अबू हुरैरह رضي الله عنه रिवायत करते हैं रसूलुल्लाह ﷺ ने जासूसी के लिये (10 आदमियों की) एक जमाअत रवाना की और उन पर आसिम बिन साबित अन्सारी رضي الله عنه को अमीर मुकर्रर फरमाया जब वह असफान और मक्का मुकर्रमा के दरमियान पहुँचे तो "बन् लिहयान" ने 100 तीर अन्दाजों का लश्कर रवाना किया जो उनकी खोज लगाता हुआ वहाँ पहुँचा और उन पर तीर बरसाना शुरू किये। इस पर सय्यिदना आसिम बिन साबित अन्सारी رضي الله عنه ने अर्ज किया:

"اللَّهُمَّ أَخْبِرْ عَنَّا نَبِيَّكَ ﷺ" (तर्जुमा: ऐ ﷺ हमारे हाल की खबर हमारे नबी ﷺ को फरमा दे) फिर वे 7 लोग शहीद कर दिये गये और बाकी 3 को कैद कर लिया। और उनमें से भी 2 शहीद कर दिये गये।-----

[صحیح بخاری "کتاب المغازی" حدیث نمبر 4086]

**2 तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अनस बिन मालिक رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में कुछ लोग हाजिर हुए और अर्ज किया कि हमारे साथ कुछ लोगों को भेजें जो हमें कुरआन व सुन्नत की तालीम दे तो आप ﷺ ने 70 अन्सारियों को उनके साथ रवाना किया जिनको "कुरा" कहा जाता है था---उन लोगों ने 70 अन्सारियों को मन्जिल पर पहुँचने से पहले ही शहीद कर दिया तो उन हजरात ने मरते दम यूँ दुआ की: "اللَّهُمَّ بَلِّغْ عَنَّا نَبِيَّنَا أَنَّا قَدْ لَقِينَاكَ فَرَضِينَا عَنْكَ وَرَضِيتَ عَنَّا"

(तर्जुमा: "ऐ ﷺ! हमारे मुताल्लिक हमारे नबी ﷺ को इत्तला फरमा दे कि हम तुझ से मुलाकात कर चुके हैं। हम तुझ से राजी और तू हमसे राजी।)----जिब्रील عليه السلام ने नबी ﷺ को खबर दी तो नबी ﷺ ने अपने असहाब رضي الله عنهم से इर्शाद फरमाया कि तुम्हारे साथी शहीद कर दिये गये। और उन्होंने ये दुआ की:

"اللَّهُمَّ بَلِّغْ عَنَّا نَبِيَّنَا أَنَّا قَدْ لَقِينَاكَ" [صحیح مسلم "کتاب الامارة" حدیث نمبر 4917]

**नोट:** सहाबा किराम رضي الله عنهم ने रसूलुल्लाह ﷺ की दुनियवी जिन्दगी में भी आप ﷺ को "गैब में मदद के लिये नहीं पुकारा": बल्कि ﷺ से दुआ करके आप ﷺ तक अपने हाल की खबर पहुँचाई क्योंकि सहाबा किराम رضي الله عنهم बखूबी जानते थे कि ﷺ के अलावा किसी भी दूसरी हस्ती को "गैब में मदद के लिये पुकारना" खालिसतन शिर्क और नाकाबिले माफी गुनाह है----। (नऊजु बिल्लाह ﷻ)

**ﷻ की मदद का जरीआ: "नेक आमाल"** ﷻ की मदद हासिल करने का एक बेहतरीन "जरीआ" और "वसीला" नेक आमाल भी हैं चुनाँचे इर्शाद होता है:

[سورة البقرة: آیت نمبر 153]

1 يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ

**तर्जुमा आयत-ए-मुबारका:** ऐ ईमान वालों! (ﷻ की) मदद तलब करो सब्र और नमाज के साथ, बेशक ﷻ सब्र करने वालों के साथ है।"

**नोट:** इस आयत का हर गिज़ ये मतलब नहीं है कि हम ये नारे लगाना शुरू कर दें: ❶ (अल मदद या सब्र! करम फरमा) ❷ (अल मदद या नमाज! रहम फरमा) -- (नऊजु बिल्लाह ﷻ) बल्कि आयत के आखिरी हिस्से से जाहिर है कि "सब्र" वालों को ﷻ की मदद नसीब होती है। जबकि "नमाज" तो सब से ज्यादा ﷻ के कुर्ब और जन्नत का जरीआ है। चुनाँचे:

**2 तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना सोबान رضي الله عنه ने रसूलुल्लाह ﷺ से तीन बार पूछा कि मुझे वह काम बताइए जो ﷻ को सबसे ज्यादा पसंद हो। और मुझे जन्नत में ले जाए तो आप ﷺ ने फरमाया: "तुम सज्दे बहत ज्यादा अदा किया करो कि हर सज्दे से ﷻ तेरा एक दर्जा बुलन्द और तेरा एक गुनाह माफ करेगा।"

[صحیح مسلم "کتاب الصلوة" حدیث نمبر 1093]

**3 तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना रबीआ बिन काब رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि मैं रसूलुल्लाह ﷺ के पास रहा करता और आप के पास वजू का पानी और हाजत का पानी लाया करता। एक मर्तबा आप ﷺ ने इर्शाद फरमाया: "मांग क्या मांगता है।" मैंने अर्ज किया मैं जन्नत में आप ﷺ की रिफाकत (साथ) का सवाल करता हूँ। आप ﷺ ने इर्शाद फरमाया: "और कुछ।" मैंने अर्ज किया बस यही काफी है आप ﷺ ने इर्शाद फरमाया: "अच्छा तो फिर कसरते सुजूद (यानी नफली नमाजों के जरीए) से मेरी मदद कर।"

[صحیح مسلم "کتاب الصلوة" حدیث نمبر 1094]

**4 तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अबू हुरैरह رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया: " ﷻ फरमाता है: जो इंसान मेरे किसी वली के साथ दुश्मनी रखे तो मेरा उसके खिलाफ ऐलाने जंग है। और मेरा बन्दा मेरा कुर्ब उस से ज्यादा किसी और चीज से हासिल नहीं करता कि जो मैंने उस पर फर्ज कर रखी हैं। मेरा बन्दा नवाफिल के जरीए मेरा कुर्ब हासिल कर लेता है हत्ता कि मैं उससे मुहब्बत करने लगता हूँ। जब मैं उस से मुहब्बत करने लगता हूँ तो मैं उसका कान बन जाता हूँ जिस से वह सुनता है, मैं उसकी आँख बन जाता हूँ जिस से वह देखता है, मैं उसका हाथ बन जाता हूँ जिस से वह पकड़ता है, मैं उसका पाँव बन जाता हूँ जिस से वह चलता है। और अगर वह मुझसे कोई चीज मांगता है तो मैं उसे अता कर देता हूँ। और अगर वह (किसी दुश्मन के मुकाबले पर मेरी मदद तलब करते हुए) मेरी पनाह तलब करता है तो मैं उसे अपनी पनाह देता हूँ।"

[صحیح بخاری "کتاب الرقاق" حدیث نمبر 6502]

**नोट:** इस हदीस की यह तफसीर बयान करना कि ﷻ उस नेक इन्सान के आज्ञा बन जाता है या वह बन्दा "खुदाई सिफात" का हामिल बन जाता है "फिर्का हुलूलिया" का बातिल अकीदा है और यह खालिसतन शिर्क और नाकाबिले माफी गुनाह है। इस सहीह हदीस के आखिरी हिस्से ने इस "चोर दरवाजे" को बन्द कर दिया है क्योंकि वह बन्दा खुद भी बदस्तूर ﷻ का मुहताज रहता है बल्कि अपने दुश्मन का मुकाबला करने के लिये भी ﷻ ही की पनाह तलब करता है। इसलिये इस हदीस में मैं "उसका कान बन जाता हूँ उसकी आँख बन जाता हूँ उसका हाथ बन जाता हूँ उसका पाँव बन जाता हूँ" से मुराद सिर्फ और सिर्फ यह है कि उस नेक बन्दे के ﷻ की फरमाँबरदारी में लगने के बाअस (की वहज से) "उसके आज्ञा गुनाहों से महफूज हो जाते हैं और उसकी अक्वलीन तर्जीह ﷻ की ज्ञात बन जाती है। जैसा कि खुद हमारे इमामे आजम, इमामुल अंबिया वल मुरसलीन, शफीउल मुजनबीन, रहमतुल्लिल आलमीन, सय्यिदना मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ के बारे में ﷻ ने इर्शाद फरमाया:

[سورة الانعام: آیت نمبر 162]

5 قُلْ إِنْ صَلَّيْتُ وَاسْتَيْسَيْتُ وَمَتَّيْتُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

**तर्जुमा आयत-ए-मुबारका:** "(ऐ महबूब ﷻ)! आप फ़र्माओ बेशक मेरी नमाज़, और मेरी कुर्बानी, और मेरा जीना, और मेरा मरना ﷻ ही के लिए है, जो तमाम जहानों का पालन वाला है।"

**ﷻ की मदद का ज़रिया: "फ़रिश्ते"** ﷻ ने अपने महबूब ﷻ की खिदमत पे फ़रिश्तों को मआमूर फ़रमाया था मगर आप ﷻ ने कभी भी फ़रिश्तों को नहीं पुकारा चुनाँचे:

[سورة التحريم: آیت نمبر 4]

1 ..... فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ مَوْلَاهُ وَجِبْرِيلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمَلَائِكَةُ بَعْدَ ذَلِكَ ظَهِيرٌ



**6 तर्जुमा आयत-ए-मुबारका:** "पस उनका (यानी रसूलुल्लाह ﷺ का) मददगार ﷺ है और जिब्राईल और मौमिनीन और उसके फरिशते भी उनके मददगार हैं।"  
**नोट:** इस आयत में ﷺ ने अपने अलावा जिब्राईल और मौमिनीन और फरिशतों को भी रसूलुल्लाह ﷺ का मददगार कहा तो इसका मतलब हर गिज यह नहीं कि उस वक़्त यह नारे लगाए जाते थे: ❶ (नजरे करम या जिब्राईल!) ❷ (अल मदद य अबु बक्रो उमर!) ❸ (या शुहदाए बद्रो - उहदा! मेरी मदद फरमाएं)-----  
 (नऊजु बिल्लाह ﷺ) बल्कि एक आम फहम इन्सान भी ऐसा बेहूदा नतीजा हर गिज नहीं निकालेगा। आयत से वाज़ेह मुराद यह है कि ﷺ ने रसूलुल्लाह ﷺ को जानिसार सहाबा किराम رضی الله عنهم अता फरमाए और आप ﷺ की खिदमत पे फ़रिशतों को भी मामूर फरमाया था। मगर "ग़ैब में मदद के लिये पुकारना" सिर्फ़ के साथ ही खास है चुनाँचे इसी "तशरीह" के सुबूत में दर्जे ज़ेल 2 आयात मुलाहिजा फरमाए:

[ سورة الانفال : آیت نمبر 62 ]

❶ وَإِنْ يُرِيدُوا أَنْ يَخْدَعُوكَ فَإِنْ حَسِبْتَ اللَّهَ هُوَ الَّذِي أَيْدَكَ بِبَنِي إِسْرَءِيلَ

**तर्जुमा आयत-ए-मुबारका:** "और (ऐ महबूब ﷺ) अगर वे (मुनाफ़कीन) आपको धोका देना चाहें तो ﷺ आप के लिये काफी है। वही जिसने आपकी मदद की अपने से और मोमिनीन के ज़रीए।"  
 [ سورة الانفال : آیت نمبر 9 ]

❷ إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَبْ لَكُمْ أَوْ يَكُفُّ عَنْكُمْ بِإِلْفٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُزِدِّينَ

**तर्जुमा आयत-ए-मुबारका:** "और (ऐ महबूब ﷺ) जब आप आपने रब से फरियाद करते थे तो उसने आप की सुन ली (फरमाया कि) मैं आप की मदद करने वाला हूँ 1000 फ़रिशतों की कतार से।"

**तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अबू हुरैरह ﷺ कहते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इस बात की तस्दीक फरमाई: "जो कोई (मुसलमान) रात को सोने से पहले "आयतुल कुर्सी" पढ़ ले तो पूरी रात (ﷺ की तरफ से) उसकी हिफाज़त के लिये एक फ़रिशता मुक़रर कर दिया जाता है और शैतान सुबह तक उसके पास नहीं आ सकता।"

[ صحيح بخاری "كتاب الوكالة" حديث نمبر 2311 ]

**नोट:** ﷺ ने उम्मतते मुहम्मदिया ﷺ की हिफाज़त पे भी अपने फ़रिशतों को मामूर फरमा रखा है मगर "उन फ़रिशतों को पुकारना" खालिसतन शिर्क और नाकाबिले माफी गुनाह है (नऊजु बिल्लाह ﷺ)

**ﷺ की मदद का जरीआ: "जाहिरी असबाब और इन्सान"** ﷺ ने इस दुनिया के निजाम को इम्तिहान के तौर पर जाहिरी असबाब वगैरह के साथ जोड़ रखा है: मसलन सूरज को दुनिया में जिन्दगी की बका का, पानी को प्यास मिटाने का, खाने को भूक मिटाने का, जरीआ बनाया है, और दीन को दुनिया में फ़ैलाने का ज़रिया अपने बन्दे को बनाया है चुनाँचे इसी ज़िम्न में चन्द आयात मुलाहिजा फरमाए।

[ سورة محمد : آیت نمبر 7 ]

❶ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ تَنْصَرُوا لِلَّهِ يَنْصُرْكُمْ وَيُخْرِجْكُمْ أَقْدَامَكُمْ

**तर्जुमा आयत-ए-मुबारका:** "ऐ ईमान वालों अगर तुम ﷺ (के दीन) की मदद करोगे तो ﷺ तुम्हारी मदद करेगा। और तुम्हारे कदम भी जमा देगा।"

[ سورة آل عمران : آیت نمبر 52 ]

❷ ..... قَالَ مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ.....

**तर्जुमा आयत-ए-मुबारका:** पूछा (ईसा बिन मरियम عليه السلام ने) कौन है मेरा मददगार ﷺ की तरफ? उनके साथी बोले हम ﷺ (के दीन) के मददगार हैं।"

[ سورة المائدة : آیت نمبر 2 ]

❸ ..... وَتَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ.....

**तर्जुमा आयत-ए-मुबारका:** "(ऐ ईसान वालों) मदद करो (एक दूसरे की) नेकी और परहेज़गारी के कामों में। और मत मदद करो (एक दूसरे की) गुनाह और ज़्यादाती के कामों में।"

**नोट:** मन्दर्जा बाला आयात (ऊपर लिखी आयतों) पढ़ने के बाद "ग़ैब में मदद के लिये पुकारने" यानी दुआ करने से मुताल्लिक 02 अहम तरीन नताइज निकलते हैं।

❶ जाहिरी असबाब इख़्तियार करने का यह मतलब हर गिज नहीं है कि उन असबाब को भी पुकारा जाए। (अल मदद या सूरज!) (अल मदद या पानी) (नऊजु बिल्लाह ﷺ)

❷ जाहिरी असबाब से मदद लेना दूरस्त है मगर ﷺ के अलावा किसी भी हस्ती से "ग़ैब में मदद मांगना" खालिसतन शिर्क और नाकाबिले माफी गुनाह है! (नऊजु बिल्लाह ﷺ)

**ﷺ की मदद की जरीआ: "मौजिज़ात"** ﷺ ने अपने महबूब सय्यिदना मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ के जरीए "हजारों "मौजिज़ात" का जुहूर फरमाया मसलन:

❶ नबी ﷺ की दुआ की बर्कत से शक्कुल कमर (चाँद दो टुकड़े) हुवा: [ صحيح بخاری "كتاب التفسير" حديث نمبر 4868، صحيح مسلم "كتاب صفة القيامة" حديث نمبر 7071 ]

❷ नबी ﷺ की दुआ से बिल्कुल ऐन उसी वक़्त बारिश हो गई: [ صحيح بخاری "كتاب الاستسقاء" حديث نمبر 1013، صحيح مسلم "كتاب صلاة الاستسقاء" حديث نمبر 2078 ]

❸ नबी ﷺ की दुआ से सय्यिदना अबू हुरैरह ﷺ को कुव्वते हाफिज़ा नसीब हुई। [ صحيح بخاری "كتاب العلم" حديث نمبر 119، صحيح مسلم "كتاب الفضائل" حديث نمبر 6397 ]

❹ नबी ﷺ के हाथ मुबारक फेरने की बरकत से सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन ऐतक ﷺ की टूटी हुई पिंडली उसी वक़्त बिल्कुल सहीह हो गई।

[ صحيح بخاری "كتاب المغازی" حديث نمبر 4039 ]

❺ नबी ﷺ के हाथ मुबारक से पानी का चष्मा निकला तो 1500 सहाबा किराम ने पिया, वजू किया और महफूज भी कर लिया।

[ صحيح بخاری "كتاب المغازی" حديث نمبر 4152 ]

❻ नबी ﷺ की शिफ़ाआत से मैदाने महशर में गुनाहगारों की निजात होगी।

[ صحيح بخاری "كتاب التفسير" حديث نمبر 4712، صحيح مسلم "كتاب الايمان" حديث نمبر 480 ]

**ﷺ "हयातुन्नबी" का मसला और सहाबा किराम का अकीदा** तमाम मखलूक़ात में सब से आला "बर्जखी ज़िन्दगी" (क्रब की ज़िन्दगी) सय्यिदना मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ को हासिल है। मगर सहाबा किराम رضی الله عنهم जिन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ की ज़िन्दगी में हजारों हिस्सी "मौजिज़ात" देखे थे। आप ﷺ की वफ़ात के बाद कभी ये ज़ुर्रत नहीं की के बर्जखी "ज़िन्दगी" को आप ﷺ की "दुनियावी ज़िन्दगी" पर कयास करते हुए आप ﷺ की "कब्रे मुबारक" पर जाकर कोई मोज़ज़ा तलब करें। क्योंकि वह जानते थे कि ऐसी हरकत करना गुस्ताखी है। चुनाँचे:



**7 ★ तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अनस बिन मालिक رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि सय्यिना उमर बिन खत्ताब رضي الله عنه के जमाने में जब लोग कहत साली का शिकार हो जाते तो आप सय्यिदना अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब رضي الله عنه के वसीले से बारिश की दुआ करते और यूँ अर्ज करते। "ऐ ﷺ बेशक हम पहले अपने नबी ﷺ को तेरी बारगाह में वसीले के तौर पर पेश करते थे और (उनकी दुआ की बर्कत से) तू हम पर बारिश बरसा दिया करता था। (आप ﷺ की वफात के बाद) अब हम तेरी बारगाह में अपने नबी ﷺ के चचा को वसीले के तौर पर ले कर आये हैं। पस (उनकी दुआ की बर्कत से) हम पर बारिश नाज़िल फरमा। (सय्यिदना अनस رضي الله عنه फरमाते हैं) पस यूँ उन पर बारिश बरस पड़ती।"

[ صحیح بخاری "کتاب الاستسقاء" حدیث نمبر 1010 ]

**नोट:** सय्यिदना उमर बिन खत्ताब رضي الله عنه ने रसूलुल्लाह ﷺ की आला तरीन "बर्जखी जिन्दगी" के बावजूद आप ﷺ से कब्रे मुबारक पर जाकर "दुआ नहीं की।" क्योंकि ﷺ के अलावा किसी भी और हस्ती से दुआ करना यानी (गैब में मदद मांगना) खालिसतन शिर्क और नाकाबिले माफी गुनाह है ﷺ ने मज़ीद यह कि सय्यिदना उमर बिन खत्ताब رضي الله عنه ने रसूलुल्लाह ﷺ की कब्रे मुबारक पे जाकर आप ﷺ से "वसीले के तौर पर" दुआ नहीं करवाई बल्कि रसूलुल्लाह ﷺ के चचा को वसीले के तौर पर ला कर उनसे दुआ करवाई और यूँ अपने अमल से उम्मत मुहम्मदिया ﷺ को अकीदा समझा दिया कि "सहीह वसीला शखसी" किसी बुर्जुग की कब्रे मुबारक पर जाकर उनसे मांगना या दुआ करवाना हर गिज़ नहीं है। बल्कि "दुनिया में मौजूद" नेक जिंदा आदमी से दुआ करवाना है और इस बात पर किसी का भी इख्तिलाफ नहीं है। अलहम्दु लिल्लाह

**"हयातुन्नबी ﷺ का मसला" और गुस्ताखाना वाकिआत** सहाबा किराम رضي الله عنهم के सहीह अकाइद के बरअक्स (खिलाफ)

"शैतान" ने कुछ लोगों को कुरआन की सख्त मुखालिफत करते और "मुतशाबिहात" के पीछे लगाते हुए गुस्ताखाना वाकिआत उम्मत में फैला कर गुमराही का दरवाजा खोल दिया है। इसी जिम्न में एक "गुस्ताखाना और झूठा वाकिआ" मुलाहिज़ा फरमाएँ: "सय्यिद अहमद रिफाइ मशहूर अकाबिरे सूफिया में से एक हैं उनका किस्सा मशहूर है कि जब 555 हि० में हज से फारिग होकर वे कब्रे रसूल ﷺ के मुकाबिल खड़े हुए तो दो अरबी अशआर पढ़े -----

**उर्दु में तर्जुमा:** दूरी की हालत में अपनी रूह को आस्ताना-ए-अकदस भेजा करता था वो मेरी नायब बनकर आस्ताना -ए- अकदस चूमती थी, अब जिस्मों की हाजिरी की बारी आई है तो अपना हाथ मुबारक अता फरमाएँ ताकि मेरे होंट उसको चूमें।" इस पर कब्र शरीफ से हाथ मुबारक बाहर निकला और उन्होंने उसको चूमा। कहा जाता है कि उस वक्त 90,000 का मजमा मस्जिदे नबवी ﷺ में मौजूद था, जिन्होंने इस वाकिए को देखा उनमें पीराने पीर शेख अब्दुल कादिर जीलानी رحمته الله का नाम भी जिक्र किया जाता है।

[ دیوبندی : مولانا شیخ زکریا سہارنپوری "فضائل حج" نوی فصل صفحہ 130 ، بریلوی : مولانا محمد الیاس قادری "فیضان سنت" مصالحو و معانی کی ششیں صفحہ 654 ]

**नोट:** सय्यिदा आयशा رضي الله عنها रसूलुल्लाह ﷺ की वफात के बाद 47 साल तक कब्रे मुबारक वाले हुजरे में रहीं। मगर आप ﷺ ने कभी भी रसूलुल्लाह ﷺ की "बर्जखी जिन्दगी" में आप ﷺ से कब्रे मुबारक पर मुलाकात नहीं की। हत्ता कि जब आप ﷺ ने इज्तिहादी गलती के बाअस (की वजह से) सय्यिदना अली رضي الله عنه से जंग का फैसला किया तब भी रसूलुल्लाह ﷺ ने अपना हाथ मुबारक बाहर नहीं निकाला।

**सिर्फ "सहीह अहादीस" ही क्यों जरूरी है ?** ﷺ के महबूब ने पहले ही से अपनी उम्मत को मन घड़त और जईफ सनद वाली अहादीस (हदीसों) के फिल्टरों से आगाह फरमा दिया था। चुनाँचे तीसरी सदी हिजरी के मशहूर मुहद्दिस अमीरुल मुस्लिमीन फ़ील हदीस इमाम अबुल हुसैन मुस्लिम बिन हज्जाज़ कुरैशी رحمته الله (अल मतवफ़ी 261 हि०) ने अपने शोहरा-ए-आफाक मज्मूआ -ए- हदीस "सहीह मुस्लिम" के मुकदमें में अपनी किताब तस्नीफ करने की बुनयादी वजह कसरत से जईफ व मुनकर रिवायात की मौजूदगी ही बताई है और तक़रीबन 100 अहादीस व रिवायात इस बात की दलील पर बयान की हैं कि हदीस का "सहीह होना" क्यों जरूरी है। मनघड़त और जईफ सनद वाली अहादीस के शैतानी फिल्टरों से बचने के लिये सिर्फ एक मर्तबा खुद भी "सहीह मुस्लिम का मुकदमा" जरूर मुलाहिज़ा फरमाएँ।

**1 तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अली رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया: "मुझ पर झूठ मत बाँधों (यानी झूठी अहादीस मत बयान करो) जिस किसी ने मुझ पर जान बूझ कर झूठ बाँधा (झूठी हदीस बयान की) तो बेशक उस शख्स का मुकाम दोजख में बनेगा।"

[ صحیح مسلم "المقدمة" حدیث نمبر 1 ]

**2 तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अबू हुरैरह رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया: "किसी भी शख्स को झूठा होने के लिये यही बात काफी है कि वह हर सुनी सुनाई बात को (तहकीक किये बगैर कि वह बात, या हिकायत, या वाकिआ या हदीस सच है कि झूठ) आगे (लोगों में) बयान कर दे।"

[ صحیح مسلم "المقدمة" حدیث نمبر 8 ]

**3 तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अबू हुरैरह رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया: "आखिरी दौर में फ़रेबकार झूठे लोग होंगे। वे तुम्हारे पास ऐसी हदीसों लाएंगे जो ना तुम ने और ना तुम्हारे आबा व अजदाद ने सुनी होंगी, पस खुद को उनसे दूर रखना कहीं वे तुम्हें गुमराही और फिल्ने में मुब्तला ना कर दें।"

[ صحیح مسلم "المقدمة" حدیث نمبر 16 ]

**4 तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضي الله عنه इर्शाद फरमाते हैं कि "बअज़ औकात शैतान किसी मज्मे में इन्सानी शक्ल में आकर हदीस बयान करता है। और जब मज्मा छूट जाता है तो कोई कहता है कि यहाँ एक शख्स आया था जिसने यह हदीस बयान की उसकी शक्ल तो याद है लेकिन उसका नाम और पता मालूम नहीं है और वह "शैतान" होता है।"

[ صحیح مسلم "المقدمة" حدیث نمبر 17 ]

**"सहीह अहादीस" की 08 बेहतरीन किताबें:** अलहम्दु लिल्लाह मुहद्दिसीने किराम رحمته الله ने अहादीस की सनदों में बड़ी महनत से छानबीन करके ना सिर्फ जईफ मनघड़त सनदों वाली अहादीस की निशानदेही कर दी बल्कि अलग से "सहीह अहादीस के मज्ममूए" भी जमा फरमाए। चुनाँचे बर्र सगीर पाक व हिन्द में "अहले सुन्नत" का दावा करने वालों तीनों मसालिक: ❶ बरेल्वी ❷ देओबंदी ❸ सल्फी (अहले हदीस) के मुशतर्का बुर्जुग शाह वलियुल्लाह मुहद्दिस देहल्वी رحمته الله (अल मतवफ़ा 1176 हि०) ने "हुज्जतुल्लाहिल बालिगह" में आठ बेहतरीन किताबों का जिक्र किया:

| न०             | 1           | 2            | 3           | 4             | 5         | 6               | 7                 | 8           |
|----------------|-------------|--------------|-------------|---------------|-----------|-----------------|-------------------|-------------|
| शुमार किताबें: | सहीह बुखारी | सहीह मुस्लिम | जामे तिमिजी | सुनन अबी दाऊद | सुनन नसाई | सुनन इब्ने माजा | मौअत्ता लिल मालिक | मुस्नद अहमद |
| कुल अहादीस     | 7,563       | 7,563        | 3,956       | 5,274         | 5,761     | 4,341           | 1,720             | 27,647      |



**8** **सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम का "बुलन्दतरनीन मकाम"** मन्दर्जा बाला (ऊपर लिखी) 8 किताबों में से पहली 6 को "सिहाहे सित्ता" भी कहा जाता है और फिर उन में से पहले 2 मजुमुओं: सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम को "सहीहहैन" कहा जाता है क्योंकि इनकी अहादीस 100 प्रतिशत सहीह हैं जबकि बाकी 6 किताबों में करीबन 80% अहादीस सहीह जबकि कुछ जईफ सनदों वाली अहादीस भी मौजूद हैं। "सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम" के मुताल्लिक शाह वलीउल्लाह देहलवी رحمہ اللہ (अलमुतवफ्फी 1176 हि०) लिखते हैं: "सहीहहैन के मुताल्लिक" मुहद्दिसीन का इत्ताफाक है कि उनमें जितनी मुत्तसिलुल अस्नाद मरफू अहादीस हैं वे सब कतई-उ-उस्सेहत है और "बिला शुबाह" सहीह है। सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम दोनों कुतुब उनके मुसन्निफीन तक तवातुर के साथ मन्कूल हैं और किसी का भी इस से इखितलाफ नहीं और उलमा-ए-किराम का कौल है कि जो कोई भी इनको हिकारत की नज़र से देखता है वह अहले बिदअत मे से है और ऐसे शख्स का रास्ता मुस्लमानों का रास्ता नहीं है। सच्ची बात तो यह है कि "सहीहहैन" का बाकी कुतुब से मुकाबला करो तो यह हकीकत तुम पर खुद खुल जाएगी और साफ नज़र आजाएगा कि "सहीहहैन" और बाकी कुतुबे अहादीस में मशरिफ़ और मगरिब का फर्क है।"

[ حُجَّةُ اللَّهِ الْبَالِغَةُ (مترجم) : حصہ اول ، صفحہ نمبر 451 ]

## "कलमा गो मुसलमान" भी शिर्क की आफत में फंस सकता है

ﷺ ने "वाहद नاکابیلے माफी जُرم" शिर्क के मुताल्लिक वाज़ेह तौर पर फरमाया:

[ سورة الانعام : آیت نمبر 82 ]

① الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ الْأَمْنُ وَهُمْ مُهْتَدُونَ

**तर्जुमा आयत-ए-मुबारका:** "जो लोग ईमान लाए और अपने ईमान के साथ जुल्म को नहीं मिलाया तो उन्हीं लोगों के लिये अमन है और वही लोग हिदायत याफता हैं।"

② **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन मसूद ﷺ का बयान है कि इस आयत-ए- मुबारका के नुज़ूल पर हम ने परेशान होकर रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा: वह कौन है जो जुल्म से बचा होगा ? तो आप ﷺ ने फरमाया: इस से मुराद आम जुल्म नहीं बल्कि शिर्क हैं।" [ صحیح بخاری "کتاب الطہر" حدیث نمبر 4629 ، صحیح مسلم "کتاب الايمان" حدیث نمبر 327 ]

**नोट:** रसूलुल्लाह ﷺ की तशरीह ने बिल्कुल वाज़ेह कर दिया के एक कलमा गो मुसलमान भी अपने ईमान के साथ शिर्क की आमिजश कर सकता है, अलबत्ता उम्मत का "एक गिरोह" इस आफत से महफूज़ रहेगा ।

**तर्जुमा सहीह हदीस:** रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया: जो कोई भी मुसलमान फ़ौत हो जाए और उसकी नमाजे जनाजा में 40 ऐसे लोग शामिल हो जो ﷺ के साथ शिर्क ना करते हो तो ﷺ उस मरने वाले के हक में उन लोगों की सिफारिश कुबूल फरमा लेता है।" [ صحیح مسلم "کتاب الجنائز" حدیث نمبر 2198 ]

**नोट:** अब तो सारे ही शैतानी वसवसे खत्म हो गए क्यूँकी जनाज़े तो सिर्फ मुसलमान ही पढ़ते हैं। लिहाज़ा जनाज़ा पढ़ने वाला कलमा गो मुसलमान भी शिर्क में मुब्तला हो सकता है। **नऊजु बिल्लाह** ﷻ

## उम्मत मुहम्मदिया ﷺ का सिर्फ "एक गिरोह" ही शिर्क से महफूज़ रहेगा

ﷺ के महबूब की 5 सहीह अहादीस मुलाहिजा फरमाएं।

① **तर्जुमा सहीह हदीस:** रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया: "मुझे तुम्हारे मुताल्लिक इस बात का डर नहीं कि तुम (पूरी उम्मत ही) मेरे बाद शिर्क करने लगोगे, अलबत्ता मुझे डर है कि तुम एक दूसरे के मुकाबले में दुनिया में रगबत करोगें।" [ صحیح بخاری "کتاب الجنائز" حدیث نمبر 1344 ، صحیح مسلم "کتاب الفضائل" حدیث نمبر 5976 ]

**नोट:** अहले सुन्नत कहलवाने वाले तीनों मसालिक: ① बरेल्वी, ② देओबंदी, और ③ सल्फी (अहले हदीस) के मुष्तर्का इमाम इब्ने हजर अस्कलानी رحمہ اللہ (अलमुतवफ्फी 852 हि०) इसी हदीस के तहत लिखते हैं: "इस से मुराद यह है कि उम्मत मज्मूई तौर पर शिर्क में मुब्तला नहीं होगी वरना उम्मत मुस्लिमा में से बाज़ की तरफ से शिर्क वाके हुआ है।" [ فتح الباری : جلد 3 صفحہ 211 ] बल्कि खुद तीनों मसालिक इस बात पर मुत्तफिक हैं कि मुसलमानों के मशहूर फिर्के "हलुलियाह" और "राफज़ी" 100 % शिर्क में मुब्तला हैं। अलबत्ता पूरी उम्मत मुहम्मदिया ﷺ गुमराह नहीं होगी चुनाँचे:

② **तर्जुमा सहीह हदीस:** नबी ﷺ ने इर्शाद फरमाया: "बेशक मेरी उम्मत (मज्मूई तौर पर) गुमराही पर जमा नहीं होगी" [ المستدرک للحاکم "کتاب العلم" حدیث نمبر 399 ]

③ **तर्जुमा सहीह हदीस:** नबी ﷺ ने इर्शाद फरमाया: "72 (फिर्के) दोजख में जाएंगे और एक जन्नत में जाएगा।" [ سنن ابی داؤد "کتاب السنّة" حدیث نمبر 4597 ]

④ **तर्जुमा सहीह हदीस:** नबी ﷺ ने इर्शाद फरमाया: "बेशक बनी इस्राईल 72 फिर्कों में तकसीम हुए और मेरी उम्मत 73 फिर्कों में तकसीम होगी "एक मिल्लत" के सिवा बाकी सब जहन्नम में होंगे।" पूछा गया वह मिल्लत कौन सी है ? आप ने फरमाया: "مَا أَنَا عَلَيْهِ وَأَصْحَابِي" ( जिस पर मैं मेरे सहाबा हैं)

[ جامع ترمذی "کتاب الايمان" حدیث نمبر 2641 ]

**नोट:** नबी ﷺ के ज़माने में वह "एक मिल्लत" सहाबा किराम ﷺ पर मुशतकिमल थी और फिर मुसलसल कयामत तक इसी मनहज पर सिर्फ नबी ﷺ का अपना इमाम मानते हुए "एक गिरोह" हक पर कायम रहेगा:

⑤ **तर्जुमा सहीह हदीस:** रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया: "मेरी उम्मत का "एक गिरोह" हमेशा हक पर रहेगा, वह गालिब ही रहेंगे, और कोई भी मुख़ालफत करने वाला उनको नुकसान नहीं पहुँचा सकेगा यहाँ तक कि ﷺ का हुकम (कयामत) आ जाएगा।" [ صحیح بخاری "کتاب الاعتصام" حدیث نمبر 7312 ، صحیح مسلم "کتاب الامارة" حدیث نمبر 4955 ]

**आखिरी वसियत:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने अपनी वफात से 3 माह पहले हज्जतुल विदा के मौक़े पर वसियत करते हुए इर्शाद फरमाया:

★ **तर्जुमा सहीह हदीस:** "बेशक मैं अपने बाद तुम मे दो ऐसी अजीम चीज़ें छोड़ कर जा रहा हूँ कि अगर उन्हें मज़बूती से पकड़ लोगे तो कभी गुमराह ना होगे: ① ﷺ की किताब और ② उसके रसूल ﷺ की सुन्नत (जो सहीह अहादीस से माखूज हो) [ المستدرک للحاکم "کتاب العلم" حدیث نمبر 1628 ، المستدرک للحاکم "کتاب العلم" حدیث نمبر 318 ]

**नोट:** ﷺ ने उलमा और दर्वेशों की तालीमात की बजाए अपनी वहीह(कुरआन और उसकी तफसीर यानी यही अहादीस) की हिफाज़त की जिम्मेदारी खुद ली है:

[ سورة الحجر : آیت نمبر 9 ]

**नोट:** "इज्माए उम्मत" को हुज्जत मानना दरअसल कुरआन और सहीह अहादीस मानने का हुकम मानने में ही दाखिल है: [ المستدرک للحاکم "کتاب العلم" حدیث نمبر 399 ]

अगर कुरआन व सुन्नत और इज्माए उम्मत की मुख़ालफत ना आए तो जदीद मसाइल के हल के लिये "कयास या इज्तीहाद" करना जायज़ है:

[ المصنف لابن ابی شیبہ "کتاب البیوع" حدیث نمبر 22,990 ]